International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 12 Issue 10 || October 2023 || PP. 117-123

कंठ संगीत में घराना व्यवस्था

दीपिका तिवारी

Research scholar, म्यूजिक , अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा (म. प्र)
Research scholar = Deepika Tiwari
(Music , Awadhesh Pratap singh vishwavidhyalay rewa madhya Pradesh)

सारांश :-

भारतीय शास्त्रीय संगीत का उदगम गुरु - शिष्य की वह विधा परंपरा धार्मिक संस्थाओं की संरक्षकत्ता तथा उन्हें राजा से प्राप्त धन शिक्षण, साधन, साधना, प्रदर्शन, इनका मिला - जुला स्वरूप मध्यकाल में घराना हुआ। इन्हीं घरानों ने मूलरूप के संगीत की सृजनात्मक शक्ति तथा संस्कार का व्यक्ति में संगीत स्वरूप का विकास कराया गया । घराना शब्द हिन्दू गुरुओं, संगीत के महान विद्वान उत्कृष्ठ कलाकार तथा महान आचार्यों के द्वारा प्रयुक्त गायन शैली के विभिन्न प्रकारों का मिला जुला स्वरूप है।

तेरहवीं शतब्दी के बाद मुसलमानों ने हिन्दू संस्कृति से संगीत को अपने स्वरूप में परिवर्तित कर ध्रुपद की धुरू, दोहा, माठा, छान्द, प्रबन्ध और कवित के स्थान पर ख्याल , कौल , कलवाना, नक्श , गुल , और तराना का आविष्कार किया।

कौल और कलवाना की भाषा अरबी व नक्श, गुल और तराने की भाषा फारसी तथा ख्याल की भाषा हिन्दी रखी । धीरे - धीरे घरानों की स्थापना होने लगी विशेष रूप से ख्याल और ठुमरी गायकी के घराने स्थापित थे तथा गायक के साथ- साथ गायन की संगीत वाद्य सारंगी घरानों का विशेष वाद्य बना , जो ख्याल, ठुमरी, तरानों की संगति के लिए महत्वपूर्ण वाद्य था। गायन को व्यवस्थित करने के लिए तबला और सारंगी वाद्य व्यवस्थित हुए। ठुमरी गायन के साथ-साथ नर्तन जुड़ गया और गायन, वादन के घरानों के साथ - साथ नृत्य के भी घराने बन गाए । इस तरह समस्त उत्तर भारत में संगीत मात्र घरानों की शिक्षा हो गाई।

मुख्य शब्द :-
ढंग *- तरीका*
मिजाज़ *– स्वभाव , मनः स्थिति ।*
कौल *- यह एक प्रकार के फारसी भाषा का गीत है ।*
कलवाना *- यह फारसी का छंदात्मक गीत है ।*
नक्श *- अरबी जुबान का छोटा गीत होता है ।*
गुल *- गुल का शाब्दिक अर्थ फूल होता है ।*
तराना *- फारसी भाषा का कीर्तन है ।*

शोध प्रविधि :- *शोध की प्रविधि वर्णात्मक है इस लेख में द्वितीयक स्त्रोतों से तथ्य संकलन कर उनका सरलीकरण किया गया है ।*

प्रस्तावना :-

घराना व्यवस्था के अन्तर्गत सैद्धांतिक ज्ञान की अपेक्षा क्रियात्मक दक्षता पर अधिक ध्यान दिया जाता था । घराने में प्रवेश के लिए शिष्य, गुरु की स्वीकृति से ही शिक्षा आरंभ करता था । कुछ संकीर्ण भावना वाले गुरु मेधावी बालको को भी शिष्य रूप में स्वीकार करने से मना कर देते थे । परिणामत: इन घराने दार संगीत शिक्षा की मध्यकालीन यात्रा करीब साढ़े तीन सौ पचास वर्षों से अधिक की नहीं है। घरानों का विकास , उन्नति

, व्यक्ति , और स्थान के नाम से घराना नाम नामांकित हुए। स्थान के नाम से निम्न घराने जैसे - दिल्ली , आगरा , लखनउ , रीवा , जयपुर , ग्वालियर , पटियाला , बनारस , यह घराने स्थान के नाम से अंकित है। परन्तु अल्ला - दियां खां का घराना , बीन कारो का घराना , रबाबियों का घराना इत्यादि घरानों के नाम वंश वाद्य तथा गुरु विशेष के नाम से अंकित है

संगीत की शिक्षा का वाहक घरानों के रूप में गुरु और शिष्य ही रहे , इस शिक्षा ने सौ रूप लिया प्रथम अर्थ के लिए संगीत शिक्षा दूसरा मानसिक आनंद के लिए संगीत शिक्षा। मुस्लिम काल के संगीतज्ञों को हेय दृष्टि से देखा जाने लगा क्योंकि संगीतज्ञों का कार्य और चरित्र समाज में अच्छा नहीं रहा परन्तु गायन में धार्मिक तथा लौकिक दोनों तरह के संगीत का विकास किया धार्मिक संगीत में साम गान , स्त्रोत पाठ , आरती , कीर्तन , भजन पद्य इत्यादि लौकिक से पारलौकिक की ओर चलता रहा ।

यह मूलतः मंदिरों का संगीत था , इसके बाद देशी गान की ग्राम गीति , भाषा गीति इत्यादि का विकास हुआ , इसमें से कई मंदिरों के अपने - अपने संप्रदाय हैं । जैसे वैष्णव, शैव संप्रदायों के साथ - साथ अन्य संप्रदाय के संगीत सम्मलित है। लौकिक संगीत, आम समाज में प्रचलित संगीत को कहा जाता है। इन्हीं में राग गायन, घराना का उच्चांग या अभिजात वृत्ति है। ग्राम गीति, भाषा गीति, के बाद राग गायन का संपर्क शास्त्रीय संगीत से है , इसी में ध्रुपद , धमार , ख्याल इत्यादि आते है और इनके वाहक घरानों के गुरु - शिष्य हुए।

संगीत में नाद ब्रह्म ही महान है, इससे उत्पन्न श्रुति, स्वर तथा सुर की समझ की गहराई घरानों की शिक्षा में अत्यंत आवश्यक मानी जाती है। आदि काल से आज तक सुर का ही महत्व चला आ रहा है सुर समूह यदि लय बद्ध है तो वह धुन रूप होता है यही गीत का मूल आत्मा है।

घराने की रीति, नीति, शैली की जानकारी इत्यादि गुरु - शिष्य की परंपरागत विधि द्वारा विस्तारित किया गया संगीत से कलुषित मन भी अहलादित हो उठता है। गाने का ढंग गुरु - शिष्य परंपरा ही बनता रहा है इस समय गाने का एक नियम ऐसा था कि गाना जिस स्वर से प्रारंभ होता था उसी स्वर से हर बार गाना आरंभ होता था।

परन्तु आज देशी संगीत का आगमन घरानों में दिखता है कलाकार अपने हिसाब से अपने तरह, अपने ढंग से गाना गाता है। इसी से आधुनिक घरानों की सृष्टि हुई जिसमें गुरु - शिष्य को परस्पर अनुकरण कर अपना ढंग लाने की कोशिश करते रहे अब गाने के ढंग में परिवर्तन कैसे आया इसके चार आधार है -

१. गला सबका एक सा नहीं होता ।

२. गले का संपद (rang) अलग - अलग होता है।

३. गले के स्वर का अलंकार एक सा नहीं होता है।

४. गायन के अलग - अलग ढंग के कारण से घरानों का विभाजित हुआ।

जैसे - कव्वालों का मिजाज़ , तो बनारस में पंडितों का मिजाज़ , ग्वालियर में मराठी पंडितो का मिजाज़ तो एक तरफ खान साहबो का मिजाज़ । इस तरह अपने - अपने स्वभाव प्रकृति सोच से अपना - अपना ढंग विकसित करते हैं। कव्वाल से अल्ला - दियां ने अपना एक ढंग तैयार किया फिर उसके बीच एक दो घर और एक नया रूप प्रदान किया।

इस तरह देशी संगीत उस्ताद और शागिर्द, गुरु - शिष्य अपनी - अपनी परंपरागत राग गान में विभिन्न प्रकृति का विकास किया गाने में वैचित्र लाने की कोशिश की और घरानों का प्रचलन आगे बढ़ा। सबसे पहले ध्रुपद गायन शुरू होता था, जो सैनी घराने से प्रारंभ हुआ, यहाँ के शिष्य ग्वालियर, जयपुर, आगरा, रामपुर के राजाश्रय में रहे जो कालांतर में ध्रुपद के साथ साथ ख्याल भी गाते बजाते थे। गुरु स्वयं ध्रुपद गाते थे शिष्यों को ख्याल सिखाया करते थे। इस तरह ध्रुपद के घराने भी ख्याल गायन शैली को विकसित किया जो आगे चलकर ध्रुपद से ख्याल का विकास सफल बना परन्तु कव्वाली गाने वालों के वंश परंपरा से ख्याल का एक विशेष घराना विकसित हुआ, जो कव्वाल बच्चों का घराना कहलाया, जो कव्वाली के साथ - साथ ख्याल

गाते थे इनके ख्याल में कौल - कलवाना की अरबी भाषा नक्श ,गुल और तराने की फारसी भाषा तथा ख्याल की हिन्दी भाषा का निर्माण किया गया । इस तरह कव्वाल घराने से ख्याल गायकी के फर्श बंदी शैली का विकास हुआ, रागदारी संगीत के तहत राग गायन मो.शाह रंगीले के ज़माने से हुआ यहां सदारंग - अदारंग नाम के दो भाई जो स्वयं ध्रुपद गाते थे परन्तु अपने शिष्यों को ख्याल की तालीम दी, आज भी इनके बनाए हुए बड़ा ख्याल - छोटा ख्याल विद्यार्थी को सिखाए जाते हैं। ख्याल गायकी में रामपुर मुंडी ख्याल गायन के लिए प्रसिद्ध रहा, दिल्ली, लखनउ, ग्वालियर, पटियाला, आगरा, किराना, जयपुर, रीवा, मेवाती, भिंडी बाज़ार, मनरंग घराना, अल्ला - दियां खां का घराना, गोखले घराना था सभी ख्याल गायन की विभिन्न शैलियां तथा शिक्षा की विभिन्न प्रणालियों के आधार पर घराने बने । ख्याल के गायकों का कल्पना विलास गायकी घराने के स्वरूप को जन्म देती गई इन घरानों में दिल्ली, लखनउ, रीवा, ग्वालियर के घराने बहुत प्राचीन हैं। शेष घराने किसी ना किसी रूप में इन्हीं घरानों की शाखाएं है।

तानसेन के सेनिया घराने से परिचय प्राप्त करने से पूर्व रीवा का प्राचीन सांगीतिक पक्ष भी जानना आवश्यक है। बघेल वंश के नारेशों के पूर्व यहां कल्चुरी का शासन था और कल्चुरी का कला शैली, कला शिल्प दर्शन हर क्षेत्र में महत्वपर्ण है इनका कला विकाश मूर्तियों, चित्रों, देवालयों का संगीत शैब संप्रदाय का था और हिंदुस्तान के प्रसिद्ध द्वादश शिवलिंग की शैब परंपरा साधना से संबंधित है शैब मत का संगीत कल्चुरी काल में गाया बजाया जाता रहा , यहां कंठ संगीत के साथ रुद्र वीणा का प्रचलन था।

इस कला संस्कृति का समायोजन बघेल वंश का युवराज कर्ण देव बाघेला का पाणिग्रहण संस्कार (विवाह संस्कार) हेहाय उर्फ चेदि वंश की राजकुमारी पदम कुमारी से विवाह के पश्चात यह शैब संप्रदाय के संगीत की कला बघेल नरेशो के बघेली संस्कृति पर विकसित हुई और यहां शैब परंपरा का संगीत कबीर दास के समय में शिव साधना का साकार और निराकार दो रूपों का पद साहित्य ध्रुपद गायन शैली को प्रभावित करता रहा।

यहां के राय, भट्ट, चारण, नट, इत्यादि कला विज्ञों द्वारा ध्रुपद की कला शैली को अपनाकर कलावंत हो गए, शिवालयों में गाते बजाते रहे तथा बघेल नारेशो के दरबार को भी शुशोभित किया। रीवा के नरेश स्वयं भी संगीत विज्ञ होते थे। महाराजा रामचंद्र के काल में तानसेन को राजगायक के रूप में संरक्षण दिया गया तथा तानसेन की प्रतिभा को संगीत की शिद्ध पराकाष्ठा तक रागांग संगीत की थाटाश्रय मूर्च्छाना पद्धति का गायन - वादन यहां विस्तारित किया गया, यह बात सत्य है मो. गौस सूफी संत थे जो चिस्तीयां संप्रदाय के सूफी संगीत को पसंद करते थे, तानसेन से उनका व्यक्तिगत संबंध था अतः सूफी संगीत का प्रभाव तथा इंद्रप्रस्थ मत का संगीत तानसेन को यहीं के कौल, कालवाना, नक्श, गुल, तराना की फारसी साहित्य द्वारा प्राप्त हुआ था। स्वामी हरिदास डागुर इनके गुरु रहे तथा वहां से शिक्षा प्राप्त करने के बाद संत गौस के पास वापस गए वहीं से रीवा नरेश महाराजा रामचंद्र का परिचय तानसेन से हुआ और वो तानसेन को रीवा ले आए , रीवा में तानसेन ने शैब मत के संगीत तथा डाडूरी संगीत जिसे रुद्र वीणा का संगीत कहा जाता इसको भी अपनाया था।

विधिवत तथा गहंतम अभ्यास आम्रकूट अर्थात अमरकंटक के कर्ण मंदिर (शिवालय) पर संगीत की शिद्धता प्राप्त करने हेतु महाराजा रामचंद्र ने तानसेन को राजसी, दरबारी शैब सांप्रदायी संगीत का विधिवत साधना विधान उपलब्ध कराया। परिणामत: तानसेन को शैब संप्रदाय की कांठाभरण वाणी विलास साधना सिद्ध हुई, यही कारण था कि तानसेन आजीवन दाहिने हांथ का सलाम केवल रामचंद्र को किया करते थे तथा बाए हांथ का सलाम अकबर को किया करते थे। महाराजा रामचंद्र भी तानसेन के सिद्धता से अधिक प्रभावित हुए और रीवा से दिल्ली दरबार में तानसेन को भेजते समय महाराजा रामचंद्र ने तानसेन की पालकी को पहला कंधा स्वयं दिया था। इसके बाद जब तानसेन दिल्ली दरबार में अकबर बादशाह के सामने गए वहां इनकी गायकी का काफी सम्मान हुआ और रीवा खंड का सजा समरा सिद्ध संगीत दिल्ली दरबार में धूम मचा दिया इन्हीं तानसेन के वंशजों ने ध्रुपद की वाणी विलास साधना से सेनिया घराने की नींव डाली तथा डागुर वाणी शैली में इंद्रप्रस्थ मत का मिश्रण कर सेनिया घराने का विकास किया। यही ऐसा घराना है, जो पूरे उत्तर भारतीय संगीत में सबसे

ज्यादा सम्मानित और तथ्यात्मक तथा क्रियात्मक संगीत के सिद्धांतो तथा गायन - वादन के आधार तत्व को प्रायोगिक संगीत के रूप में गुरु शिष्य परंपरा के माध्यम से आगे बढ़ता रहा है। काफी समय अंतराल के बाद ध्रुपद गायन शैली के कलावंत परिस्थिति वश ख्याल गाने लगे कुछ कलावंत तो केवल ध्रुपद ही गाते रहे और ख्याल गायन शैली का विकास दो रूपों में विकसित किया । इस तरह रेवा खंड का संगीत तानसेन तथा उनके वंशजों तथा शिष्यों के माध्यम से सम्पूर्ण भारत में प्रसारित किया गया।

रेवा खंड के आलावा, बुंदेलखंड में सांगीतिक दृष्टि से प्रमुख स्थान ग्वालियर रहा , जो संगीत शिक्षा का बहुत विशेष केन्द्र था जो प्रबन्ध गायन काल से ध्रुपद गायन काल तक तथा ख्याल गायन से आज तक निरंतर प्रगतिशील रहा है।

अवध खंड का संगीत की दृष्टि से मूलस्थान लखनउ रहा यहां के मंदिरों में रागांग संगीत पर आधारित ध्रुपद, धमार की अवधि शैली का विकास यहां के गुणी जनों के द्वारा किया गया जो गायन, वादन, नृत्य तीनों में आगे चलकर लखनउ घराने के रूप में व्यवस्थित हुआ । इनमे हिन्दू शाखा के कलाकार अपनी - अपनी ध्रुपद तथा ख्याल शैली का विकास करते रहे । कालांतर में कव्वाल बच्चो का लखनउ घराना ख्याल गायकी में काफी प्रसिद्ध हुआ ।

16 वीं शताब्दी के बाद इंद्रप्रस्थ संगीत मुस्लिम कलाकारों द्वारा ख्याल तथा सारंगी, तबला इत्यादि माध्यम से विस्तारित किया परिणामत: दिल्ली घराने का उदय हुआ ।

इन घरानों से ही अन्य घराने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहे थे । शिष्य इन घरानों में आए और शिक्षा प्राप्त की और शिष्य भी इतने महान रहे कि इन घरानों के महान कलाकारों को घराने से सह सम्मान अपने - अपने स्थान ले गए परिणामत: अन्य नए - नए घरानों का विकास हुआ जो आज के संगीतिक सर्वेक्षण के हिसाब से घरानों के गायन - वादन शैली को स्थानीय प्रभाव तथा वहां के प्राकृतिक बोली भाषा साहित्य में मूल संगीत के स्वरूप को अपनाकर उन खास घरानों की स्थापना की गई। इस तरीके से घराना का उद्गभव के मूलाधार निवास स्थान तथा प्रतिभा सम्पन्न गुरु तथा प्रतिभा सम्पन्न शिष्य, प्रतिभावान घराना बनाए। इनका मान सम्मान शिष्य गुरु के बीच मर्यादा वेशिष्ट को लेकर कला आज भी इन घरानों की जीवित है। मूलतः घरानों को चार भागों में बांटा जाता है -

1) गायकी के अनुसार, २) स्थानीय आधार पर, ३) गुरु घराने के आधार पर, ४) गायन शैली के आधार पर । गायकी के अनुसार गायकी मूलतः-

१. ध्रुपद - धमार , २ . ख्याल - तराना, ३.ठुमरी - टप्पा ,४.ग़ज़ल कव्वाली ही है ।

हर घराने के कलाकारों में इस बात की स्पर्धा रहती थी कि हम ज्यादा से ज्यादा हर संगीत को जाने ,समझे और गाएं अतः ध्रुपद, धमार के घरानों के कलाकार, ख्याल, तराना, ठुमरी ,टप्पा, ग़ज़ल, कव्वाली, सभी को जानना अपनी आवश्यकता समझते थे।

इस कारण से मूलतः दो ही घराने मूल रूप से माने गाए है, पहला ध्रुपद का घराना और दूसरा ख्याल का घराना इनके कलाकार गुरु तथा शिष्य सभी हर गायकी को जानने का प्रयास करते थे यही कारण है कि यही मूल दो गायकी शिक्षा के रूप में स्थापित हैं।

ध्रुपद के घरानों में मूलतः सेनिया घराना है इस ज़माने में ईश्वर स्तुति का माध्यम ध्रुपद होता था, इसका मूल स्थान मथुरा और वृंदावन रहा है जिनका इतिहास ब्रज के देवालयों में संगीत के रूप विकसित हुआ। इनके अतिरिक्त बैजू, गोपाल नायक इत्यादि विद्वान ध्रुपद गाते थे। ग्वालियर के राजा मानसिंह तोमर देशी भाषा में ध्रुपद भाषा का प्रचार किया इनकी सभा में नायक बक्शू, नायक बन्नू, गोपाल लाल, धुवा और ध्रुपद दोनों गाते थे ।

तानसेन के समय में शैब संप्रदाय का संगीत सम्पूर्ण हिंदुस्तान के शिवालयों में प्रचलन में था। रीवा के देवालयों में तथा राजदरबार में भी ध्रुपद गया जाता था। तानसेन का आगमन ध्रुपद गायन के रूप में 1515 के आसपास रीवा नरेश महाराजा रामचंद्र के शासन काल में हुआ था। इनके समय में रामदास, कृष्ण दास, चर्जू

दास, भगवान दास, सूरदास इत्यादि गायक थे। रीवा में अमरकंटक के कर्ण मंदिर पर इनका गाना होता था तथा राज दरबार में गायन मोती महल बांधवगढ़ के किले में होता था जो वर्तमान में उमरिया जिले में स्थित है। ऐसा कहा जाता है कि चांद खां और सूरज खां उस समय के अच्छे गायक थे ।

तानसेन के समयकाल में ही उनके गुरु स्वामी हरिदास डागुर का नाम मिलता है। इसके बाद औरगज़ेब के समय में इन्होंने गायकों को संरक्षण नहीं दिया था परन्तु यदा कदा सूफी संतों के मजारों तथा दरगाहों में कव्वाली, ग़ज़ल, कौल, कलवाना, मर्सिया, दुरुद, फारसी, संगीत इत्यादि की शब्बे महफ़िल हुआ करती थीं। कुछ ध्रुपद गायक यथा स्थान अन्य रियासतों में चले गए जैसे जयपुर, उदयपुर, ग्वालियर, बंगाल। तानसेन के अकबरी दरबार से ही सेनिया घराने का आरंभ हो जाता है।

सेनिया का विभाजन करने के पूर्व हमें तानसेन की वंशावली तथा उनके पुत्र तथा कन्या वंश का विस्तार से सजरा खानदान प्रस्तुत करना आवश्यक है तानसेन के सेनिया घराने से दिल्ली, आगरा, किराना तथा पटियाला या पंजाब घराना तथा जयपुर घराना है। तनरस के वंशजों द्वारा ही पटियाला व पंजाब घराने की ख्याल गायकी का प्रदुरभाव हुआ जिनके शिष्यों में अली बक्श , नबी बक्श , फते अली ,इत्यादि रहे इसी घराने में उस्ताद बड़े गुलाम अली खां हुए। आज के पण्डित राम नारायण, कुमार गंधर्व, तथा अन्य बहुत से कलाकार इस घराने से सम्बन्धित है। दिल्ली घराना कि कव्वाली परंपरा के कलाकार सिद्दार खां, बुगरा, घसीट , कल्लू ,सिताब , नजर अली ,बौली बक्श ,नत्थू खां, गुलाब खां, मुहम्मद खां, काले खां, गामें खां इत्यादि हुए, इसी दिल्ली घराने की लखनउ शाखा कव्वाल बच्चो का घराना नाम से प्रसिद्ध हुई।

ख्याल के घरानों में ग्वालियर घराना हद्दू खां तथा उनके दादा नत्थन पीरबक्श मूल पुरुष माने जाते थे। ग्वालियर के कादिर बक्श, पीरबक्श, हास्सू खां, नत्थू खां, गुले इमाम , मेहदी हुसैन खां, रहमत खां, मुहम्मद खां, निसार हुसैन यही निसार हुसैन खां ग्वालियर के मराठी पंडितो को ख्याल की शिक्षा दिए।
पंजाब घराना की एक शाखा में कालू खां कव्वाल से ख्याल गायन की परंपरा आगे बढ़ती है। जिनमे अलीबक्श , फते अली , आशिक अली , काले खां , अली बक्श (कसूर वाले) , अली बक्श के वंशजों में गुलाम अली (सब रंग), बरकत अली, मुबारक अली, अमान अली, इत्यादि अच्छे कलाकार हुए। बरकत अली, मुबारक अली 1947 के देश विभाजन के समय पाकिस्तान चले गए थे। इन्हीं के घरानों से श्याम चौरासी घराना, भिंडी बाज़ार घराना, बना यह सब पंजाब के कलाकार थे। बड़े फते अली, अमानत अली , सलामत अली - नज़ाकत अली , रोशानार, नूरजहां थे सब ख्याल शैली की शिक्षा वाले थे जो 1947 के विभाजन में पाकिस्तान चले गए थे। पटियाला घराने की शाखा, एक ऐसी भी जानकारी मिलती है कि पटियाला घराना चार घरानों का मिश्रण है - दिल्ली , आगरा , ग्वालियर , रीवा, जयपुर इन चारो घरानों की शैली का ख्याल गायन इन उस्तादों के पास है।

घराने की गायकी में आवाज लगाने का ढंग जिससे एक घराना ,दूसरे घराने को पहचाना जाता है यहाँ घरानों की विशेषता का वर्णन करते हैं =

ग्वालियर घराने की विशेषता ------

इस घराने की गायकी जोरदार, खुली आवाज, स्पष्ट आवाज से गायन शुरू होता है, गमक का अधिक प्रयोग करते है।बोल तानों में लय कारी रखते है, सीधी सपाट तानों का प्रयोग, इस गायकी में फिरत तानों का विशेष महत्त्व होता है, बहलावा आकार में, बोल आलाप भाषा के शब्द में, तानों में छन्द शैली इत्यादि इस घराने की विशेषता है।

आगरा घराने की विशेषता ----

इस घराने के ख्याल शैली में छन्द का काम अधिक होता है, आलाप छन्द प्रधान रखते हैं। उस्ताद फैयाज खां इस घराने के कलाकार में विशेष थे थोड़ा बोल तान के साथ आलाप प्रस्तुत करते थे, छन्द का काम, भाषा से जोड़ा जाता है। यह मूलतः धमार गायकी से ख्याल में लाया गया है।

किराना गायकी का घराना -----

पुराने कलाकारों को शैली पलटा, अलंकार, फिरत तान का काम होता था परन्तु गायकी शांत रस पूर्ण थी। इस घराने में स्वर विस्तार मींडदार गायन शैली है। इस घराने के अब्ददुल करीम खां, वहीद खां, विशेष कलाकार थे जिन्होंने एक नई धारा की सृष्टि की ये बहलाव के साथ सरगम नहीं करते थे। गाने में सरगम का काम ज्यादा होता था। अब्दुल करीम खां बड़े मुहम्मद खां की तरह ही हिन्दुस्तानी संगीत में दक्षिण संगीत लाए थे। इनकी आलाप चारी प्रधान थी उन्होंने रहमत खां की नकल की फिर दक्षिण की शैली को अपने गायन में भर लिया ये बंदिश गाने के बाद सरगम करते थे।

जयपुर घराने की विशेषता ----

यहां की बंदिश सुगठित होती थी गाना विलंबित से मध्य बिलंबित तक जाता था गायकी में शब्द और स्वर का विशेष सामंजस्य रखते थे आवाज का लगाव ध्रुपद की जोरदार शैली से होता था। ताने अलंकारिक एवं मुक्त, दानेदार होती थी। यहां की गायकी में मींड का काम , बंदिश, छन्द मींड, अलंकार एकत्रीकरण को सुंदर और सामान्य रूप से प्रदर्शित कारते है।

अतरौली घराने की विशेषता -----

तान छन्द का विस्तार करने में इस घराने की असली विशेषता रही है इस घराने के कलाकार जयपुर से मुबारक आली की मुश्किल तानों की नकल करते थे। जिसमें छन्द तान, लट, उलट, पलट, सुलत, फंदे की तान इत्यादि यहां के कलाकारों ने नकल कर प्राप्त किया था। यह ताने क्रमबद्ध रूप से बंधी थी। जिनका प्रचलन अतरौली घरानों की विशेषता बनी।

पटियाला गायकी की विशेषता -----

इस घराने का गायन तान प्रधान था गाने का आलाप भी ताने प्रधान था उनकी चलन अति द्रुत सरगम से होती थी गाना चमत्कार प्रधान होता था। यहां विस्मय और आश्चर्य की तैयारी होती थी यहां आस्तीन तानों का प्रयोग किया जाता था, यहां युगल गायन की परंपरा थी। फते अली सुर विस्तार करते अली बक्श तान देते , शांत भाव से गामक लेना यहीं की विशेषता थी। श्याम चौरासी ने गुलाम अली की नकल की।

सहसवान घराने की विशेषता ---

गामक और छन्द का काम यहां विशेष है द्रुत की ताने, लयकरी के ध्रुपद अंग की सरगम , सेनिया की द्रुत मुश्किल ताने कल्पनानुसार इस घराने में प्रयोग की जाती थी। टप्पा शैली के दानेदार ताने यहां की खास विशेषता है।

बनारस गायकी की विशेषता ---

लयकारी का काम इस घराने की खास विशेषता रही है। क्योंकि यहां तबला, ध्रुपद, तंत्रकारी, नृत्य, ईत्यादी के घराने है। अतः सभी की खास - खास चीजों का प्रभाव इनके बोल विस्तार में दिखता है। तान में लयकारी का काम ध्रुपद जैसा ख्याल में भी प्रयोग करते है।

भिंडी बाजार घराने की विशेषता ----

मुरादा बाद घराना और सहसवान घराना दोनों घराने के उस्ताद इनायत खां थे जिनके शिष्य छाज्जू खां, नज़ीर खां भिंडी बाज़ार में आ बसे, छाज्जू खां ध्रुपद गाते थे और नज़ीर खां ख्याल गाते थे। नज़ीर खां ने ध्रुपद की भी तालीम ली थी, इस घराने की मूल विशेषताएं मीरखंड और चौखंड की तान है।

टप्पा घराने की विशेषता ----

रामपुर में चार प्रकार के टप्पे प्रचलन में थे जिनमें लड़ीदार, फंदा दार, गुथाव दार,खंड दार तान प्रयोग होता था, सामान्य तौर पर प्राचीन काल का टप्पा, गायन का एक ही प्रकार था जो आज भी है उसे ढाई दाने का टप्पा कहते है।

ठुमरी घराने की विशेषता -----

ठुमरी घराने में बनारसी ठुमरी, लखनवी ठुमरी मूल रूप से प्रसिद्ध थी। लखनउ की ठुमरी में शेर पढ़ा जाता है। बनारसी ठुमरी में दोहा पढ़ा जाता है। बाकी सारी विशेषताएं एक सी होती है। ठुमरी शैली की विशेषता चैती, काज़री, सावनी होरी भी ठुमरी शैली से गाई जाती है।

घरानों में विवर्तन के मुख्य परिणाम :-

1. परिवर्तन तभी होता है जब नित्य नवीन चीज़ सामने आती है।
2.परिवर्तन तभी आता है जब हमारी रुचि बदलती है।
3. राजा और राजात्व खत्म होने पर कलाकारों ने अपनी शैलियों में परिवर्तन किया है।
4. आज तो शिक्षा पद्धति में किसी एक ही शैली को धारण करके चलना मुश्किल है। विद्यालयों में विभिन्न शैली के शिक्षक होते है। इससे संगीत की दृढ़ता लुप्त हो रही है। और उससे परिवर्तन आना स्वाभाविक है।
5. आज की कठिन आर्थिक परिस्थिति के कारण भी घराना व्यवस्था में परिवर्तन आया है

संक्षिप्त सार :-

संगीत में घराना व्यवस्था का आज की आधुनिक गायन शिक्षा पद्धति शास्त्र को पढ़कर घरानों का प्रायोगिक ज्ञान प्राप्त कर विद्यार्थी को नीर क्षीर विवेक गुण को ग्रहण कर नवीन सृष्टि करना होगा क्योंकि अब बसुधैव कुटुम्बन की कल्पना घराने के स्वरूप को विस्तार देती है। रेडियो, टेलिवीजन, कंप्यूटर तकनीक, सूचना प्रौद्योगिकी, नेट ,you tube, इत्यादि संचार के माध्यम संगीत के क्षेत्र में मोबाइल के जरिए अब हांथ में संगीत रखते है।

एक विशेष शैली निर्धारित होती थी जिसके बल पर शिक्षा दी जाती थी। गुरु शिष्य के संपर्क में एक घनिष्ट संबंध होता था जो शिक्षा को आगे बढ़ाने में काफी सहायता पहुंचाता था।

कठोर परिश्रम ही घराना शिक्षा को आगे बढ़ाने में सहायक होता था। अनुशासन से शिक्षा ग्रहण करना घराने दार शिक्षा का एक विशेष गुण होता था। घराना शिक्षा ने नियमितता एक बहुत बड़ा गुण होता था । घराना शिक्षा में व्यक्तिगत शिक्षा दी जाती थी जिससे शिष्य अच्छी तरह शिक्षा ग्रहण कर सके। विभिन्न घरानों में से कौन सी शिक्षा का गुण ग्रहण करना अच्छा होगा यह बताना गुरु का कर्तव्य होता था।

संदर्भ ग्रंथ सूची:-

1. हिन्दुस्तानी संगीत में तानसेन का स्थान, वीरेंद्र किशोर राय चौधरी
2. रीवा दर्शन, dr. एस अखिल
3. संगीत विशारद, बसंत
4. ख्याल गायकी का घराना, dr. सन्नो खुराना
5. कंठ संगीत मे घराना व्यवस्था का विवर्तन, dr . राका मित्रा
6. हिन्दुस्तानी संगीत की घराना परंपरा, शम्भूनाथ मिश्र